بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ ۔ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना हज़रत खलीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **05.09.14** मस्जिद बैतुल फ़तूह, लंदन।

प्रगति करने वाली क़ौमें उत्तम से अति उत्तम की खोज में रहती हैं। जिस प्रकार मेहमानों ने सारे कार्य कर्ताओं का धन्यवाद किया है, मैं भी सभी कारकुनों का शुक्रिया अदा करता हूँ, महिला कारकुनों को धन्यवाद देता हूँ। अल्लाह तआला उनको प्रतिफल प्रदान करे तथा उनकी यह सेवा क़बूल फ़रमाए, उनको पहले से बढ़कर ख़िदमत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

तशहहुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ न फ़रमाया- अल-हमदुलिल्लाह, पिछले सप्ताह जलसा सलाना यू के आयोजित हुआ और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से कुशलता पूर्वक अपनी बरकतों से हमें लाभान्वित करते हुए सारी बरकतें अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से शामिल होने वालों ने तथा दुनिया में बैठे हुए सारे लोगों ने देखीं और इनसे लाभ प्राप्त किया। प्रत्येक मिलने वाला और असंख्य लिखने वाले यही कहते हैं तथा लिखते हैं कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हर काम में अत्यंत सुधार था इस बार के प्रबन्धन में। सम्बोधन कर्ताओं के भाषण भी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से बड़े सुन्दर रंग में तैय्यार हुए थे, ज्ञान वर्धक एंव आध्यात्मिक थे। जलसे के बाद के ख़ुत्बे में जलसे के बीच नाज़िल होने वाली बरकतें अल्लाह तआला के फ़ज़्लों तथा उसके समर्थन का वर्णन करता हूँ। लोगों के अनुभव भी बयान करता हूँ जो मेहमान आए हुए होते हैं। इसी प्रकार कारकुनों को भी धन्यवाद देता हूँ। कुछ प्रबन्धन सम्बंधी बातें जिनमें कमियां रह गई हों उनका भी वर्णन करता हूँ। तो इस प्रकार इनके सम्बंध में कुछ कहूंगा। जलसे का माहौल अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से ऐसा होता है कि प्रत्येक नेक पृक्रति पर यह नेक प्रभाव डालता है। कुछ जमाअत स बाहर के लोग तथा ग़ैर मुस्लिम केवल इस लिए जलसे में शामिल होते हैं कि देखें इनसे सम्बंध रखने वाले अहमदी जो जलसे के विषय में जमाअत से बाहर के दोस्तों को जलसे की बरकतों के बारे में बताते ह वे किस सीमा तक सत्य हैं, उसकी क्या वास्तविकता है? और जब ये जमाअत के बाहर के दोस्त यहां आकर शामिल होते हैं जलसे में, तो फिर अधिकांश लोग यही कहते हैं कि जो कुछ हमें जलसे के बारे में बताया गया उससे बहुत अधिक हमने पाया। और कुछ पर इसका इतना प्रभाव होता है कि बैअत कर लेते हैं। इस बार भी दो मेहमानों ने जो रशिया से थे, जलसे का माहौल देखकर बैअत की। इसी प्रकार कुछ ऐसे भी थे जो गोयटे माला और चिली तथा कोस्टारिका के लोग अमरीकन देशों के। जिन्होंने जलसे पर बैअत के समय तो बैअत नहीं की परन्तु अत्यंत प्रभावित थे। पूरा जलसा सुना फिर मुझसे मुलाक़ात की और कहने लगे हमें खेद है कि हम बैअत नहीं कर सके। हमारे दिल इस ओर बिल्कुल झुके हुए हैं, हमने सत्य को वास्तव में पहचान लिया है, समझ लिया है। अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को देखा है कि किस प्रकार जमाअत पर नाज़िल होते हैं और अब हम भी बैअत करना चाहते हैं, हमारी बैअत ले लें। अतः कल इस प्रकार के छः लोग, चार पुरुष दो महिलाओं ने ज़ोहर की नमाज़ के बाद बैअत की। कुछ लोग जो शामिल होते हैं उनके अनुभव तो मैं बयान करूंगा लेकिन इन बैअत करने वालों के अनुभव मैं पहले बयान करता हूँ जिन्होंने वहां बैअत नहीं की थी परन्तु कल की है। इनमें से एक दोस्त जो गोयटे माला में रहते हैं, समी क़ादिर साहब हैं, उर्दुन से इनका सम्बंध है। व्यापार के लिए वहां हैं। कहते हैं कि मैं ने इस जलसे में परस्पर प्रेम एंव भाई चारे की वह अमली सूरत देखी जो हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम में पैदा करना चाहते थे। जलसा सालाना के उत्तम प्रबन्ध, अनुशासन, मित्रों की निष्ठा, आज्ञा पालन तथा आपस की सहानुभूति एंव भाई चारे की भावना ने अत्यधिक प्रभावित किया। और उस हदीसे मुबारका का क्रिया शील चित्रण देखा कि मोमिनों की आपस की मुहब्बत एंव भाई चारे का उदाहरण उस शरीर की भांति है जिसके एक अंग को पीड़ा हो तो पूरा शरीर उसे अनुभव करता है।

इसी प्रकार कोस्टारिका से आने वाले प्रतिनिधि मंडल में हैदर सबीलिया शामिल थे। वे कहते हैं कि मुझे अहमदिय्या जमआत के रोचक पबन्धन ने बड़ा प्रभावित किया। अहमदिया जमाअत के प्रत्येक मेम्बर का अपने ज़िम्मे लगाई डयूटी को निष्ठा पूर्वक अदा करने ने अत्यंत प्रभावित किया। मैं विश्व के अनेक देशों से आए हुए लोगों से मिलकर, उनसे बात चीत करके तथा उनके साथ विचारों का आदान प्रदान करके अत्यधिक प्रसन्न हुआ हूँ। जलसे में शामिल होकर वास्तविक इसलाम की ओर मेरा ध्यान आकर्षित हुआ है और इस संदर्भ में श्रद्धा और ईमान में प्रगति हुई है और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के सम्बोधन, नसीहतें तथा मार्ग दर्शन सारे मुसलमानों के लिए हैं।

फिर कोस्टारिका से ही एक महिला हैं डयाना नईमा साहिबा, कहती हैं, जलसे में सम्मिलित होना एक अदभुत अनुभव था। विश्व के विविध देशों से आए हुए विभिन्न क़ौमों तथा जातियों के लोगों के पारस्परिक प्यार मुहब्बत ने मुझपर गहरा प्रभाव डाला है। इस वातावरण ने मुझे रसूले करीम सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम का ज़माना याद दिला दिया। मुझे विश्वास है कि जमाअत अहमदिया प्रगति करेगी आर इसके द्वारा इसलाम का प्रेम से परिपूर्ण सन्देश भी फैलता चला जाएगा। उन्होंने भी कल बैअत की है। इसी प्रकार कल बैअत करने वालों में गोयटे माला, चिली, कोस्टारिका से आने वाले जैसा कि मैं ने कहा चार पुरुष तथा महिलाएं थीं। हर एक ख़िलाफ़त के दौर में हमन यही कुछ देखा है कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जब भी कोई जलसे पर आया, नेक प्रभाव लेकर गया अथवा नेक प्रभाव ने उसे घायल किया और बअत

करके सिलसिले में शामिल हो गया। अतः यह निशान है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त का, यह प्रमाण है आपक सत्यवान होने का, यह निशान है ख़िलाफ़त के साथ अल्लाह तआला के समर्थन का। जो बातें हम देखते हैं ये मानव प्रयास से तो सम्भव नहीं हो सकतीं। जैसा कि मैं ने पिछले ख़ुत्बे में भी कहा था कि जलसे का माहौल एक ख़ामोश तबलीग़ कर रहा होता है और इसमें शामिल होने वाला हर अहमदी और हर एक कारकुन एक ख़ामोश मुबल्लिग़ होता है। सारे बाहर के मेहमान यह दृश्य देखकर कि चुपचाप सारे काम एक धारे में बहते चले जा रहे हैं, कोई आपत्ति नहीं, कोई भगदड़ नहीं, कोई हठ अथवा कहीं कठोर बात नहीं होती बल्कि हंस मुख चेहरे दिखाई देते हैं। अब मैं जलसे के मेहमानों के अनुभव भी पेश करता हूँ। इस बार कांगो कंशासा से स्पीकर, प्रदेश असम्बली बंदो नदो बोनी फ़ाइशो व बोशेवा साहब पहली बार जलसा सालाना में शामिल हुए। तीनों दिन जलसे की सम्पूर्ण कारवाई उन्होंने देखी, जलसा गाह में बैठकर सुनी, नमाज़ों के बीच भी जलसा गाह में रहते, विश्व बैअत का दृश्य भी उन्होंने देखा। ये कहते ह, यहां हर कोई ऐसे मिल रहा है जैसे वर्षों से एक दूसरे को जानता हो। फिर बेनिन के गृह मत्री ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि मेरे पास शब्द नहीं कि जिनसे मैं जलसे के प्रबन्ध की प्रशंसा कर सकूं, बड़ा सुन्दर तथा सुव्यवस्थित जलसा था। मैं ने जमाअत के लोगों में स्वेच्छा से दूसरों की सेवा करने की तीव्र भावना देखी। यह भावना प्रत्येक अहमदी की आत्मा की पुकार बन चुका है यही कारण है कि आज जमाअते अहमदिया प्रगति की ओर अग्रसर है। फिर कहते हैं कि जमाअत की विश्व स्तरीय शक्ति का भेद यही है कि जमाअत को एक ख़लीफ़ः मिला हुआ है। योगेन्डा के रक्षा मंत्री डा0 किसपैस चियूंगा ने जलसे में भाग लिया। कहते हैं जलसे की गरिमा का दृश्य बयान से बाहर है, दो दिन यथावत जलसे की कार्यवाही देखी और प्रदर्शनी भी देखी, सब कुछ देखने के बाद कहने लगे, उनकी मुझसे मुलाक़ात भी हुई थी, इस पर ये कहने लगे कि इस प्रकार का अनुशासन तो दुनिया की कोई सेना भी पैदा नहीं कर सकती। नाइजेरिया से आने वाले प्रतिनिधि मंडल में एक टेलीवीज़न के डायरैक्टर इसहाक़ साहब थे। कहते हैं जलसा सालाना के सारे प्रबन्ध विश्व स्तरीय थे। एयर पोर्ट से रिसीव करने से लेकर जलसे के अन्त तक हर दृष्टि से सारे प्रबन्ध उत्तम थे। जलसे में भाषण बहुत अच्छे थे मैं ने पहली बार आलमी बैअत का दृश्य देखा, बहुत ही भावनात्मक दृश्य था, इस दृश्य ने मेरे दिल पर गहरा प्रभाव छोड़ा। जलसा सालाना की गोष्ठियों में जब ख़लीफ़तुल मसीह उपस्थित होते थे तो यह दृश्य बड़ा ही आत्मिक एंव भावना पूर्ण होता यहां तक कि मैं अपनी भावनाओं पर नियंत्रण न रख सका और मेरी आँखों से आँसू बह पड़े कि किस प्रकार हज़ारों की संख्या में लोग अपने इमाम के सामने सिर झुकाए बैठे हैं। ऐसा दृश्य मैं ने जीवन में कभी नहीं देखा। नाइजेरिया से एक अख़बार नैशनल मिरर की उप सम्पादक सकीना लवाल साहिबा आई थीं। कहती हैं कि जलसा सालाना यू के पर आकर अनुभव हुआ कि जमाअत का प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से प्यार मुहब्बत का सम्बंध रखता है। प्रत्येक व्यक्ति मुस्कुराकर मिलता और हर समय एक दूसरे की सहायता के लिए तैय्यार है। बैल्जियम के नगर टर्न हार्ट के वायस मियर तथा कौन्सलर शामिल थे। कहते हैं कि इसलाम के सम्बंध में जो कुछ हमने मीडिया में देखा था जलसे में आकर बिल्कुल इसके विपरीत देखा। इसलाम का जो नक़शा आपने पेश किया है वही वास्तविक इसलाम है, इसमें काई सन्देह नहीं कि इसलाम की शिक्षा बड़ी प्यारी है। बैल्जियम से एक तबलीग़ के अंतर्गत दोस्त शोबाम मेदम साहब थे। कहते हैं कि एक लम्बे समय से अहमदियत से परिचित था और पहली बार अहमदियों के जलसे में शामिल हुआ हूँ। जलसे में जो तीन दिन व्यतीत किए और सब कुछ देखा, मैं स्पष्ट रूप से कहता हूँ कि अहमदियत ही इसलाम की सही तसवीर है। मैं ने यहां पर लोगों को सजदे में रोते देखा है इसका गहरा प्रभाव है। माल्टा से एक पत्रकार ईवान बातोलो साहब आए थे। टी वी पर एक प्रोग्राम की मेज़बानी भी करते हैं। तीन साल से जमाअत के साथ इनका सम्बंध है। उन्होंने मेरा इन्टर व्यू भी लिया, इच्छा थी कि मेरा इन्टर व्यू लें। कहते हैं कि मेरे लिए यह बात दिन के उजाले को भांति साफ़ हो गई है कि 125 सालों में जमाअत ने इतनी अधिक उन्नति की है कि दुनिया के 206 देशों में जमाअत स्थापित हो चुकी है यह निःसन्देह इलाही समर्थन एंव सहायता के बिना सम्भव नहीं।

फ़्रैंच गयाना से भी अहमदी तथा ग़ैर अहमदी मेहमान जलसे में आए थे इन मेहमानों में एक ग़ैर अहमदो मेहमान मिस्टर थैरी ऐरी कोट थे जो कि इतिहास के अध्यापक हैं और अक़ीदे के अनुसार ईसाई हैं। कहते हैं, मुझे जलसे में शामिल होने का निमन्त्रण मिला तो मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मुझे ये लोग क्यूं निमन्त्रण दे रहे हैं, मुझे कुछ वीडियो भी दिखाईं, समझाया भी गया। परन्तु फिर भी जलसे के महत्व का अनुमान नहीं था। लेकिन अब स्वंय जलसे में आकर मुझे समझ आ गई कि इस जलसे का जमाअत में क्या महत्व है बल्कि पूरी दुनिया के लिए यह जलसा कितना महत्व पूर्ण है। दुनिया को ऐसे जलसों की आवश्यकता है जिसमें मुहब्बत सब के लिए घृणा किसी से नहीं का नारा हो। फिर इस बार यहां विभिन्न प्रेसों के काफ़ी पत्रकार भी आए हुए थे और बाहर के देशों के भी। एक हिन्दु पत्रकार ने कहा कि मेरी माँ ने मुझ मना किया था कि मुसलमानों के आयोजन पर न जाओ, ये बड़े भयानक लोग हैं। तुम्हें मार देंगे और पता भी न चलेगा कि कहां गई हो। कहती हैं कि मैं ने अपनी माँ की बात नहीं मानी। जो मुझे यहां अनुभव हआ है अब मैं अपनी माँ को जाकर कहूंगी कि अहमदी हम से अधिक शांति प्रिय हैं और इनकी बातें इतनी सुन्दर हैं और शिक्षा इतनी सुन्दर है कि तुम्हें भी जाकर देखनी चाहिए। कहती हैं कि शुक्र है कि मैं इस जलसे से वंचित नहीं रही। फिर एक पत्रकार ने कहा मैं ने कभो अपने चर्च में भी इतना सम्मान नहीं देखा जितना मेरा यहां हुआ है। क़ज़ाकिस्तान से एक ग़ैर जमाअत दोस्त आरती नेफ़ साहब, कहते हैं कि मैं दिल की गहराइयों से ख़लीफ़तुल मसीह और अहमदिया जमाअत का शुक्र गुज़ार हूँ कि उन्होंने मुझे इस जलसे में आमन्त्रित किया और कुछ कहने का समय प्रदान किया। फिर कहते हैं, मुझे सबसे अधिक आकर्षण आपके मॉटो मुहब्बत सबके लिए घृणा किसी से नहीं लगता है। जहां कट्टर वाद अपनी चरम सीमा पर तथा धार्मिक भाई चारा लुप्त होता जा रहा है।

ऐसे समय में यह जमाअत अहमदिया ही है जो अपने मानव प्रेम कार्यों के नूर से इस संसार को पुनः प्रकाश वान करने का प्रयास कर रही है जो इसलाम धर्म पहले से ही अपने अन्दर रखता है। सेरालियोन से आने वाले प्रतिनिधि मंडल में डा0 उसमान फ़ोफ़ा साहब जो इन्टर रिलीजस कौन्सल सेरालियोन के जर्नल सैक्रेट्री हैं। फिर एक प्रोफ़ैसर करीम साहब विश्व विद्यालय में विज्ञान के विभाग के प्रमुख हैं और सेरालियोन मस्लिम कांग्रेस के जर्नल सैक्रेट्री हैं। फिर एम्बो बंकोरो साहब जो देश की राजधानी फ्री टाउन में रोलिंग पार्टी के चैयर मैन हैं, ये जो हैं बंकोरा साहब, उन्होंने अल्लाह के फ़ज़्ल से बैअत भी कर ली है। ये कहते हैं मुलाक़ात के बीच उन्होंने कहा कि जलसा सालाना की कार्यवाही सेरालियोन के टी वी ने लाइव प्रसारित की है और सेरालियोन के राष्ट्रपति ने भी जलसे की कार्यवाही देखी। इस साल ट्रेनिडाड और टोबागो के मिनिस्टर आफ़ लीगल एफ़ैयर्स मिस्टर प्रकाश रमादार भी शामिल हुए। कहते हैं कि कम्यूनिटी के मेम्बर्स का ख़लीफ़तुल मसीह के लिए जो प्यार था, इंसान उसको शब्दों में बयान नहीं कर सकता। जहां तक जलसे की बात है तो हर चीज़ प्रभाव पूर्ण थी। वहां काम करने वालों का उल्लास इस वास्तविकता पर साक्षी था कि यह जमाअत किसी इंसान की बनाई हुई जमाअत नहीं है बल्कि इस जमाअत के पीछे ख़ुदा तआला का हाथ है।

करोशिया से नौ लोगों का प्रतिनिधि मंडल जलसे में सम्मिलित हुआ। उनमें से पाँच कैथोलिक महिलाएं थीं जिनमें से चार यूनीवर्सिटी की विद्यार्थी और एक महिला म्यूज़ियम विभाग को हैड हैं इसके अतिरिक्त चार पुरुष थे। अरबिक सैन्टर के डाइरैक्टर अली बैगवेच कहने लगे कि मैं न संसार के विभिन्न देशों के असंख्य आयोजनों में भाग लिया है लेकिन अहमदिया जमाअत के जलसे में जिस श्रद्धा एंव प्यार से बच्चे सेवा कर रहे थे, यह दृश्य मैं ने पहले कभी नहीं देखा।

फिर एक मेम्बर माइया साहिबा जो ज़ग़रब यूनीवर्सिटी में विश्व धर्मों की स्टडी कर रही हैं उन्होंने मुझसे कई सवाल जवाब भी किए और कहती हैं इन सवालों से मैं बड़ी सतुष्ट भी हुई हूँ, जवाबों से मेरी काफ़ी संतुष्टि हो गई है। कहने लगीं मुसलमान, अन्य मुसलमान तथा दुनियावी रहनुमा भी ख़लीफ़तुल मसीह से मार्ग दर्शन लें तो बहुत सी समस्याओं का शांति पूर्ण ढंग से निवारण हो सकता है। करोशिया से इंगलिश और फ्रैंच में मास्टर्स की विद्यार्थी रोबाटा ने भी विभिन्न धर्मों के पेशवाओं तथा शांति के नियमों के सम्बंध में प्रश्न किया था। फिर कहती हैं कि मेरी जवाब से मुझे बड़ी संतुष्टि हो गई। हेटी से गेरी गीतो जो कि हेटी में मिनिस्टरी ऑफ़ कल्चर के डाइरैक्टर हैं, जलसे में शामिल हुए। वे कहते हैं कि हमारे देश हेटी से पहली बार कोई सरकारी प्रतिनिधि जमाअत अहमदिया के इस विशाल जलसे में शामिल हुआ है मुझे इस जलसे में सम्मिलित होकर अत्यंत हर्ष हो रहा है आपकी यह व्यवस्था देखकर मैं स्पष्ट कहता हूँ कि अहमदिया जमाअत सारे विश्व के लिए एक उदाहरण है।

फिर बैलज़ से एक नई बैअत करने वाली ईवान वारन जिनका इसलामी नाम, हमज़ा रशीद है। कहती हैं कि जलसे के इन तीन दिनों में मुझे जमाअत के विस्तार के बारे में पता चला। इस जलसे का प्रबन्धन एंव आयोजन अपने भीतर एक जादुई प्रभाव रखता है फिर कहती हैं मेरे सम्बोधनों के विषय में, कि एक अदभुत अनुभव था और इनके चलते हर शब्द पर मेरे आँस् बह निकलते थे, मैं अपने भावनाएं बयान नहीं कर सकती। फिर आलमी बैअत का दृश्य भी बड़ा प्रभाव पूर्ण था। कहती हैं निःसन्देह मैं जलसे में शामिल होने के बाद, पहले की अपेक्षा ख़ुदा तआला से अधिक निकट हुई हूँ। फिर एक अफ्रीकन अमरीकन लजना ने अपना सपना भी मुझे बताया। कहती हैं कि मं ने सपना देखा कि एक सुन्दर मस्जिद में नमाज़ अदा कर रही हूँ और वह मस्जिद बड़ी विशाल है और वहां बहुत से लोग हैं जिनको मैं पहचानती भी नहीं। हर बार मुझे अनुभव होता है कि अब मैं किसी अन्य देश में हूँ। कहती हैं, अब इस जलसे में शामिल होकर मुझे अपने सपने का स्वप्न फल मिला। यहां विभिन्न देशों के लोग एकत्र होकर बड़ी संख्या में नमाज़ पढ़ते हैं। अब अल्लाह तआला से दुआ है कि वह मुझे पूर्ण आज्ञापालन के साथ बेहतरीन मुसलमान बन कर जीवन व्यतीत करने की तौफ़ीक़ दे। मैक्सिको के एक नौ मुबाए बशीर कोयाको साहब कहते हैं कि दुनिया के विभिन्न देशों से सम्बंध रखने वाले लोग ख़लीफ़-ए-वक़्त की मुहब्बत एंव निष्ठा की भावना से परिपूर्ण थे, जो अदभुत था। जलसे के कारकुन मेहमानों की सेवा स्वेच्छा से अत्यंत निष्ठा पूर्वक कर रहे थे। अहमदिया जमाअत विश्व में एक नमूने की जमाअत है जो वास्तविक इसलाम की रूप रेखा दुनिया के सामने पेश कर रही है। मैक्सिको के नौ मुबाए इमाम इब्राहीम चर्चल साहब जो अपने सत्तर अनुगामियों के संग अहमदियत मं शामिल हुए। कहते हैं, मेरे दिल ने अनुभव किया कि जलसे के दिनों में असंख्य फ़ज़्ल एंव बरकतें नाज़िल हो रही हैं और ख़िलाफ़त के साए में दुनिया के विभिन्न रंग व जाति की क़ामें परस्पर प्रेम एंव सौहार्द से परिपूर्ण हैं। कहते हैं, ख़लीफ़-ए-वक़्त के सम्बोधन से जहां मेरे ज्ञान में वृद्धि हुई वहीं मुझे हार्दिक संतोष की प्राप्ति भी हुई। पनामा से ग्रेगोरयो गोंज़लीज़, यह कहते हैं, कि जलसा सालाना यू के में विभिन्न लोगों का समागम, अनुशासन, स्नेह तथा भाई चारे ने मुझे बड़ा प्रभावित किया है। मैं ने अनुभव किया कि प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से दिल से मुहब्बत करता है। यह एक बेजोड़ समागम था जिसने हमारे आध्यात्मिक जीवन में आंदोलन पैदा कर दिया। फ्रैंच गयाना से एक दोस्त मिस्टर डियोयो आब्दू आए थे, 2008 में बैअत की थी उन्होंने। जलसे में पहली बार शामिल हुए, कहते हैं, मैं जन्म से मुसलमान था। मैं ने फ्रंच गयाना में सबसे पहले अहमदियत क़बूल की थी लेकिन आज जलसा सालाना में शामिल होकर मुझे अनुभव हुआ है कि वास्तव में इसलाम क्या है। मुझे अहमदियत की वास्तविकता तथा ख़लीफ़-ए-वक़्त के महत्व का आज आभास हुआ है।

बैल्जियम से एक दोस्त अबदू फ़ाल साहब आए थे। सैनिगाल के हैं ये। कहते हैं, जब मैं बैल्जियम में अहमदियों की मस्जिद में गया तो वहां अत्यधिक प्यार मुहब्बत देखी। फिर यहां भी मैं ने अहमदियों में प्यार मुहब्बत ही देखा। इस प्यार मुहब्बत और भाई चारे के माहौल से मैं

बड़ा प्रभावित हुआ। फ़िलपाईन के एक दोस्त योल ओलाया साहब कहते हैं, अलहमदुलिल्लाह जलसे में शामिल होकर मुझे जिस चीज़ की तलाश थी वह मिल गई। इन्शाअल्लाह अब मैं अपना आने वाला जीवन अहमदी के रूप में ही व्यतीत करूंगा। फिर माली से डा0 कायता माउल्लाह साहब कहते हैं, जलसे के चलते मेरी जो भावनाएं थीं वे जीवन में पहली बार पैदा हुई थीं, पहली बार यहां आया हूँ और अब यह इरादा लेकर जा रहा हूँ कि सदा जलसों में आऊंगा। इस बार अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से केन्द्रीय प्रेस की टीम और यू के प्रेस की टीम ने अच्छा काम किया है और इस साल पहली बार जलसे की बड़े प्रभाव पूर्ण ढ़ंग से क्वरेज हुई है और अहमदियत और वास्तविक इसलाम का सन्देश दुनिया को पहुंचा है। केन्द्रीय प्रेस के समपर्क से दूसरे देशों से भी प्रेस और मीडिया के लोग आए, उनके भी अच्छे अनुभव थे जैसा कि मैं अनुभवों में वर्णन कर चुका हूं। प्रेस के द्वारा लगभग तेरा लियान लोगों तक यू के में ही पैग़ाम पहुंचा है और कुछ अन्य जो अभी आर्टिकल लिख रहे हैं जो समाचार दे रहे हैं उनकी सूचना अभी नहीं मिली। अनुमान है कि लगभग बारह तेरह मिलयन को इसके द्वारा यह पैग़ाम पहुंचा है और शिक्षा पहुंची है। इसी प्रकार अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से एम टी ए भी जलसे के प्रोग्राम अपनों और ग़ैरों तक पहुंचाने में बड़ी भूमिका निभाता है और इस साल इसकी भी, सदा की भांति बड़ी भूमिका रही है। जहां इसके द्वारा जलसे की काररवाई देखने वाले अहमदियों ने ख़ुशी और शुक्रिया का इज़हार किया वहीं अन्य लोगों ने भी इसके बारे में बड़े अच्छे अनुभवों का इज़हार किया है। ग़ैर अज़ जमाअत अरबों ने भी इस बार बड़े अच्छे अनुभव भेजे हैं बल्कि यहां तक कहा है कि वास्तविक इसलाम यही है जिसकी विश्व को आवश्यकता है, जो अहमदिया जमाअत फैला रही है और फिर यह भी कहा कुछ लोगों ने कि यही वास्तविक ख़िलाफ़त की व्यवस्था है जिसकी आज मुस्लिम उम्मत को आवश्यकता है।

घाना से जो आया है एक अनुभव कि कमासी घाना से एक ग़ैर अहमदी दोस्त ने लिखा है कि मैं ने जामअत के सम्बंध में बहुत कुछ सुन रखा था लेकिन जब मैं ने घाना टी वी पर आपके प्रोग्राम देखे तो मुझे आश्चर्य हुआ कि जो हमें हमारा लोकल इमाम, जमाअत के सम्बंध में बातें बताता है वे सब झूठ हैं और मैं ने पहली बार किसी मुसलमान जमाअत को इस प्रकार अति सुन्दर ढ़ंग से इसलाम की वास्तविक शिक्षा पेश करते और कट्टर वाद की निंदा करते देखा है।

फिर सेरालियोन से ईसाई दोस्त फ्रांस फ़ोरबी कहते हैं कि आपके जलसे के प्रोग्राम मेरे लिए आज सवेरे बड़े बरकत का कारण हुए। मैं जलसे की लाइव कवरेज से बड़ा प्रभावित हुआ हूँ, शुक्रिया। फिर सेरालियोन के एक अहमदी दोस्त कहते हैं, अलहाज अली इमामे, कि मैं ने अपने पड़ौसियों को जलसे के प्रोग्राम दिखाने के लिए अपने घर आमन्त्रित किया था मैं ने देखा कि सेरालियोन में अधिकांश लोग जलसे का लाइव प्रसारण देख रहे थे। अबू बकर क़ौन्ते कहते हैं कि क्या ही वैभव शाली जलसा था, अल्लाह तआला इस जमाअत को सारे विश्व में फैला दे। यह इस मीडिया के अतिरिक्त है जिसका प्रेस के सम्बंध में मैं वर्णन हो चुका है। फिर इस साल एम टी ए की लाइव स्ट्रीमिंग के द्वारा भी अन्तिम दिन जो इन्टर नैट पर देखा जाता है, तीन लाख तीस हज़ार लोगों ने जलसे की कार रवाई देखी और शेष दिनों में भी पिछले वर्षों की अपेक्षा कई हज़ार की संख्या अधिक थी और एम टी ए पर जो देखते हैं वह इसके अतिरिक्त है। अतः ये अनुभव भी आपन सुने, कवरेज का हाल भी सुना परन्तु सदा यह बात याद रखनी चाहिए कि ये बातें हमारे क़दम आगे बढ़ाने के लिए और अधिक जोश पैदा करने वाली होनी चाहिएं, न कि इस बात पर हम ख़ुश होकर बैठ जाएं कि बहुत कुछ प्राप्त कर लिया है। उन्नति करने वाली क़ौमें ख़ूब से ख़ूब तर की तलाश में रहती हैं। अतः अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से समस्त जलसा अच्छा गुज़र गया। मेहमानों ने अच्छा प्रभाव ग्रहण किया। मैं ने कहा सम्बोधन कर्ताओं की तक़रीरें भी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अच्छी थीं। अल्लाह तआला इन नक प्रभावों को सदा क़ायम भी रखे और अपने जीवन का अंश बनाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और जिस प्रकार मेहमानों ने सभी कार्य कर्ताओं को धन्यवाद दिया है मैं भी सारे कारकुनों का शुक्रिया अदा करता हूँ, काकुनात का शुक्रिया अदा करता हूँ, अल्लाह तआला इनको प्रतिफल प्रदान करे तथा उनकी यह सेवा क़बूल फ़रमाए। उनको पहले से बढ़कर भविष्य में सेवा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और केवल ज़ाहिरी ख़िदमत न हो बल्कि इसलाम की शिक्षा की वास्तविक रूह भी इनमें पैदा करे और इन्हें सबको, शामिल होने वालों को भी और इन ख़िदमत करने वालों को भी वास्तविक एंव सच्चा अहमदी बनाए।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwar Ayyadahullhu Ta'la 05.09.2014

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *OfficeAnsarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ की स्वीकृति से मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का सालाना इज्तिमा दिनांक 14-15-16 अक्तूबर 2014 दिन मंगल, बुद्ध, जुमेरात को क़ादियान दारुलअमान में आयोजित होगा। इन्शाअल्लाह